No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-1

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

10735

जून, 2018

एम.एच.डी.-1 : हिन्दी काव्य-1
(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **चार** प्रश्नों के उत्तर देने हैं । **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) अरे इन दोहुन राह न पाई ।

हिंदू अपनी करे बड़ाई गागर छुवन न देई ।

वेस्या के पाइन-तर सोवै यह देखो हिंदुआई ।

मुसलमान के पीर-औलिया मुर्गी मुर्गा खाई ।

खाला केरी बेटी ब्याहैं घरहि में करै सगाई ।

बाहर से इक मुर्दा लाये धोय-धाय चढ़वाई ।

सब सखियाँ मिलि जेंवन बैठीं घर-भर करै बड़ाई ।

हिंदुन की हिंदुवाई देखी तुरकन की तुरकाई ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो कौन राह ह्वै जाई ।

(ख) मेरें जाति-पाँति न चहौं काहूकी जाति-पाँति ।

मेरे कोऊ कामको न हौं काहूके कामको ।

लोकु परलोकु रघुनाथही के हाथ सब,

भारी है भरोसो तुलसीके एक नामको ।।

अति ही अयाने उपखानो नहि बूझैं लोग,

साह ही को गोतु गोतु होत है गुलामको ।।

साधु कै असाधु कै भलो कै पोच, सोचु कहा,

का काहू के द्वार परौं, जो हौं सो हौं रामको ।।

(ग) माई री म्हा लियाँ गोविन्दाँ मोल ।। टेक ।।

थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँचोड्डे लियाँ बजन्ता ढोल ।

थे कह्याँ मुंहौधे म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री ताजाँ तोल ।

तण वाराँ म्हाँ जीवन वाराँ, वाराँ अमोलक मोल ।

मीरा कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ पूरब जणम की कोल ।।

(घ) अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं ।

तहाँ साँचे चलें तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं ।

घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरी आँक नहीं ।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं ।।

2. 'पृथ्वीराज रासो' में वर्णित प्रसंगों का विवेचन कीजिए । *10*

3. क्या कबीर अद्वैतवादी थे ? विचार कीजिए । *10*

4. तुलसीदास की विचारधारा का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए । *10*

5. भक्ति-साहित्य में मीरा का महत्त्व क्या है ? विचार कीजिए । *10*

6. पद्माकर के काव्य-कौशल पर विवेचनात्मक निबंध लिखिए । *10*

7. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** पर टिप्पणी लिखिए : *10*

   (क) विद्यापति का काव्य-सौंदर्य

   (ख) सूरदास के काव्य में प्रेम

   (ग) बिहारी की भाषा